(श्लोक-११)

श्रीभगवान् का अपना भजन करनेवालेको
उसी प्रकार भजनेका कथन

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव
भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥

हे अर्जुन! जो भक्त मुझे जिस प्रकार भजते हैं, मैं भी उनको उसी प्रकार भजता हूँ; क्योंकि सभी मनुष्य सब प्रकारसे मेरे ही मार्गका अनुसरण करते हैं॥ ११॥

(श्लोक-१२)

देवताओंकी उपासनाका लौकिक फल शीघ्र प्राप्त होनेका कथन

काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा॥

इस मनुष्यलोकमें कर्मोंके फलको चाहनेवाले लोग देवताओंका पूजन किया करते हैं; क्योंकि उनको कर्मोंसे उत्पन्न होनेवाली सिद्धि शीघ्र मिल जाती है॥ १२॥

(श्लोक-१३)

चारों वर्णोंकी रचना करनेमें भगवान् के अकर्तापनका कथन

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां
विद्ध्यकर्तारमव्ययम्॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—इन चार वर्णोंका समूह, गुण और कर्मोंके विभागपूर्वक मेरे द्वारा रचा गया है। इस प्रकार उस सृष्टि-रचनादि कर्मका कर्ता होनेपर भी मुझ अविनाशी परमेश्वरको तू वास्तवमें अकर्ता ही जान॥ १३॥

(श्लोक-१४)

श्रीभगवान् के कर्मोंकी दिव्यता और उनके जाननेका फल

न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले
स्पृहा।

इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते॥

कर्मोंके फलमें मेरी स्पृहा नहीं है, इसलिये मुझे कर्म लिप्त नहीं करते—इस प्रकार जो मुझे तत्त्वसे जान लेता है, वह भी कर्मोंसे नहीं बँधता॥ १४॥

(श्लोक-१५)

पूर्वज मुमुक्षुओंकी भाँति निष्काम कर्म करनेके लिये आज्ञा

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्॥

पूर्वकालमें मुमुक्षुओंने भी इस प्रकार जानकर ही कर्म किये हैं। इसलिये तू भी पूर्वजोंद्वारा सदासे किये जानेवाले कर्मोंको ही कर॥ १५॥

(श्लोक-१६)

कर्म और अकर्मको तत्त्वसे जाननेका फल